(SJIF) Impact Factor-7.675 ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April-2021

SPECIAL ISSUE CCXCIII (293)

Dhrupad : It's Various Aspects, Style and Development

ध्रुपद शैली : विविध आयाम तथा क्रमिक विकास

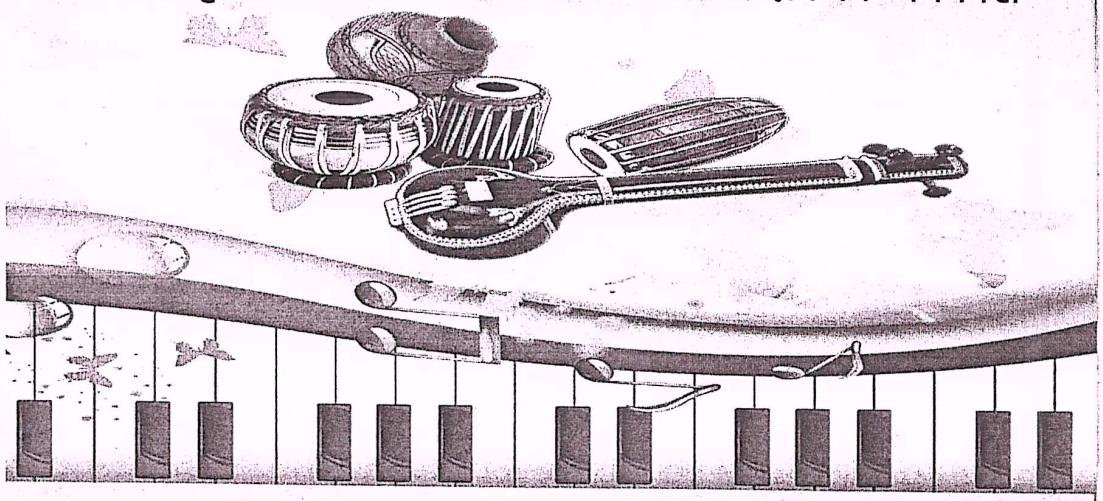

Prof. Virag S. Gawande
Chief Editor & Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Dr Sarita Sanjiv Ingale
Editor
Head, Department of Music
Late Chhaganlal Muljibhai Kadhi kala Mahavidyalaya,
Achalpur Camp .444805
Dist.Amravati.

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar International Publication

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Art & Science

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	Role Of Dhrupad In Indian Classical Music Learning — **Dr. Aditi Sharma Garg**	1
2	From Dhrupad to Khayal — **Sadhana Shilledar**	4
3	The need for Promotion and Propogation of Drupad style in present Music Education System — **Dr. Monali Masih**	7
4	Dhrupad Origin and Its Emergence — **Prof.Pravin R. Alshi**	9
5	Effect of Various Frequencies of Dhrupad &Khayalon Cereal Grass:Triticum Aevistum — **Dr. Ankush Giri / Pranita B. Wakode**	19
6	Origin of Khyal Style And Its Development — **Sanika Goregaonkar /Dr. Sheetal More**	25
7	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपरा में धृपद का पूर्व रूप तथा वर्तमान — डॉ.सुजाता व्यास	31
8	उदयपुर की धृपद परम्परा (१८६०—१९५०ई.) — प्रो.डॉ.कौमुदी क्षीरसागर	34
9	ख्यालगायन के मुलस्त्रोत (उपज)तथा उसका विकास — प्रा.डॉ.सौ.वर्षा ध. कुळकर्णी	39
10	'भारतीय संगीत में 'धृपद' का महत्त्व — डॉ.वैशाली देशमुख	43
11	धृपद का साहित्यिक दृष्टि से विवेचन — डॉ. पूर्णिमा एस दिवसे	47
12	वर्तमान संगीत शिक्षा में धृपद गायनशैली के प्रचार एवं प्रसार की आवष्यकता — प्रा. गिरीष प्रेमलाल चंद्रिकापुरे	50
13	धृपद : एक सांगीतिक विधा — प्रा.डॉ.कु.प्रिती बी. इंगळे (वाकपांजर)	53
14	धृपद की उत्पत्ति एवं विकास — प्रा.ज्ञानेश्वर बोंम्पीलवार	57
15	भारतीय संगीत में धृपद गायकी का अनुशीलन — डॉ मुक्ता पु. महल्ले	61
16	धृपद शैली में ग्वालियर घराने का अनोखापन — प्रा.डॉ.अस्मिता नानोटी	63
17	'धृपद' : उत्पत्ति एवं विकास — प्रा. अनिल प्रल्हाद निंबाळकर	66
18	धृपद की उत्पत्ति एवं विकास — प्रा.दत्तात्रय जोशी	71
19	धृपद की उत्पत्ती एवं विकास — डॉ.प्रतिभा चं.पवित्रकार	74
20	वर्तमान संगीत शिक्षा मे धृपद गायन शैली के प्रचार एव प्रसार की आवश्यक्ता — प्रा. दिपक महादेव जामनिक	77

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 293 (CCXCIII)
ISSN : 2278-9308
April, 2021

'भारतीय संगीत में 'धृपद' का महत्त्व

डॉ.वैशाली देशमुख
विभाग प्रमुख (संगीत) शासकिय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय,औरंगाबाद.
मो.८४११८२७५७५

भारतवर्ष की सांगितिक धरोहर अनेक वर्षोंसे अविरत चली आ रही है । अंधकार युग से आधुनिक युग तक भारतीय संगीत यह परवर्तनिय रूप में दिखाई देता है । परीवर्तनता यह गुण कहते हुए आज भारतीय संगीत इस गुण के कारण संपूर्ण विश्व में सराहनीय है । भारतीय संगीत की यह परंपरा तीन स्वरोंसे शुरू होकर आज अनेक गीतप्रकारोंसे सजती हुई दिखाई देती है । अनेक गीतप्रकारों में 'धृपद' यह गीतप्रकार भारतीय संगीत में बडा महत्वपूर्ण गीतप्रकार माना जाता है ।

तेरहवी शताब्दी में संपूर्ण भारतवर्ष में मुघल सत्ता प्रस्थापित होने लगी । मुघल सत्ता का परीणाम भारत की सामाजिक, राजकिय और सांस्कृतिक परंपराओंपर हुआ । और इसी कारण जो प्रांतीय लोकसंगीत वर्तमान समय मे था उस संगीत पर मुघल सत्ता का परिणाम होने लगा और उस संगीत में परीवर्तन शुरू हो गया । फलस्वरूप देशी संगीत पर पर्शियन संगीत का परिणाम हुआ और प्रबंध गायन में परीवर्तन होकर उसी से 'धृपद' गायकी की उत्पत्ती मानी जाती है ।

'धृपद' गायन शैली शास्त्रीय संगीत की प्राचीन गायन शैली है । पंधरवी शताब्दी में ग्वालीयर के राजा मानसिंह तोमर सिंहासन पर बैठे । और ऐसा माना है ग्वालीयर के संगीत का उत्कर्ष, विकास, राजा मनासिंह तोमर के काल में ही हुआ । अनेक विव्दान, पंडितों के संगीतज्ञों के मतानूसार 'धृपद' शैली का आविष्कार और विकास पंधरवी शताब्दी में राजा मानसिंह तोमर ने किया है ।

ग्वालीयर के संगीत संप्रदाय का आरंभ राजा मानसिंह तोमर के समय से होता है । कॅप्टन विलर्ड ने ''Treaties of Hindustan'' में लिखा है की This sort of composition has its origin from the time of Raja Mansingh of Gwalior, who is considerd as the father of Dhrupad Singeres कॅप्टन विलर्ड ने राजा मानसिंह को ही 'धृपद' शैली का प्रर्वतक माना है ।

स्वर, ताल, शब्द एवं लय युक्त शैली 'धृपद' कहलाती है । 'धृपद' यह शैली प्राचीन शैली का ही विकसित रूप दिखाई देता है । पं.भरतमूनी के 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ में बत्तीसवें अध्याय में ध्रुवा शब्द का उल्लेख है और उसके पाँच अंगों का वर्णन किया है । ऐसा माना जाता है की धृवागीती में ही धृवपद में संस्कृत श्लोंकों को गाकर ऋषीमुनी भगवान की आराधना किया करते थे ऐसा उल्लेख मिलता है । कवी कालीदास बाण, सुबन्धू के संस्कृत ग्रंथों मे भी धृवागिती का उल्लेख मिलता है । धृवा संस्कृत व प्राकृत (मागधी, शैरसेनी) भाषा में होते थे ।पंधरवी शताब्दी सें सतरहवी शताब्दी तक उत्तर भारत मे संत कबीर, मीराबाई, तुलसीदास, सुरदास इ. संतकवीओंने ईशस्तुतिपर, आध्यात्मिक विषयों में धृपदो की रचनायें लिखित रूप में मिलती है अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुलफजल के अनुसार, ध्रुवपदों का विषय गुणी एवंवीर व्यक्तियों की प्रशंसा भी रही है । मध्यकाल में धृपद को उच्च श्रेणी का गायन माना जाता था । धृपद गायकोंको प्राचीन काल में कलावंत कहा जाता था । राजा मानसिंह तोमर की धृपद परंपरा पंधरवी शताब्दी से तानसेन की परंपरा के साथ १८वी शताब्दी तक बराबर चलती रही । धृपद गायकों को धृपदिये कहलाने की परंपरा शुरू हुई । राजा मानसिंह तोमर ने

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

मानकौतुहल नामक ग्रंथ की रचना की । इनके अनूसार मानकुतूहल में अनेक धृपद गीतों की रचना है । यह गीत देशी भाषा में होते थे । पंधरवी शताब्दी में धृपदोंकी भाषा ब्रज और संस्कृत होती थी ।

संस्कृत भाषा में निम्नलिखित धृपद है । इस धृपद का राग विभास है और ताल चौताल में निबध्द है ।

नमाभि भक्त वत्सलं कृपालू शील कोमलं
भजामि ते पदांबुजं अकामिना स्वाधमदं ।।स्थाई।।
निमाक स्यामसुंदरं भवांबुनाथ मंदरं
प्रफुल्ल कंजलोचनं मदादिदोष मोचनं ।।अंतरा।।

धृपदोंकी भाषा संस्कृत और ब्रज भाषा होती थी । शौरसेनी भाषासेंही ब्रजभाषा की उत्पत्ती हुई है । धृवा स्वररचना जातीयोंपर आधारीत होती थी । और धृपदोंकी स्वररचनाऐं रागोंपर आधारीत होती थी । जाती गायन सें विकास होकर राग निर्माण होने लगे और धृवा गायन में जातीयों का उपयोग न होते हुए रागों का उपयोग होने लगा । धृवा में जो जातीगायन उपयोग में लाया जाता था उन जातीयों मे लयकारी बोल, अंग, तिहाईयोंका उपयोग किया जाता था । उदग्राह, धृव, अंतरा और आभोग इ. चार धातुओंसे धृव प्रबंध तयार हुआ है । और धृपद में स्थायी अंतरा, संचारी अभोग ये चार धातू प्रयुक्त होते है । इसका अर्थ यही है की ध्रुव प्रबंध धृपदों का मुलभुत आधारस्तंभ है । अनूपसंगीत रत्नकार ग्रंथ में पं. भाव भट्टनें लिखा है ।

प्रतिपादं यत्रवनध्दमैष पादचतुष्टयम्
उद्ग्राह ध्रुवकाभोगांतरं धृवपदं स्मृतम् ।।

इसका अर्थ यही है की उद्ग्राह, ध्रुव, आभोग, अंतरा इन चार भागों से धृवपद जाना जाता है ।

संस्कृत भाषा के इस धृपद में नरनारीकथा एवं शृगारस का वर्णन है । इनके बाद के काल में राजाओं की प्रशंसा पर धृपदोंकी रचना की गयी । तानसेन रचित धृपद में महाराजा की प्रशंसा दिखाई देती है ।

शुभ लगन शुभ मुहुरत, शुभ साज शुभ राज राजे
(स्था. छत्रपती छत्र चढे तेजसो प्रताप बढे, जनसुख मांगत गुनी तानसेन, अकबर महान राग रंग राजे ।।अंतरा।।

धृपद मुलतः एक शब्द प्रधान गीत शैली है, इसमें शब्दों के स्पष्ट उच्चारण का विशेष महत्व है । शब्द इस शैली का मुलतत्व है, और उसकी भावमयता शब्दप्रधान होती है । धृपद स्वर, शब्द, ताल और लय प्रधान गीत शली होने के कारण मर्दाना गीत के नाम से जाना जाता है । धृपद एक गंभीर गीतशैली है इसलिये इसमें एक-एक स्वर व अक्षर का गणितिय समतोल है ।

धृपद में स्थायी, अंतरा, संचारी और अभोग ये चार भाग होते है । धृपद में साथ संगत के लिये मृदंग और पखावज का उपयोग किया जाता है । धृपद अधिकतर चौताल, सुलताल, झंपा, तीव्रा, ब्रम्हताल, रूद्रताल इ. तालोंमें गाए जाते है । धृपद में आलापगान करने की परंपरा नही है । अपितू धृपद के गायन के आरंभ में रागों में आलापी करने की परंपरा है और वह आलापी सुक्ष्म लय में नोम् तोम् प्रकारकी शब्दो सें विलंबित लय में शुरू होकर मध्यलय में आकर समाप्त की जाती है । प्रथम धीमी गती सें आलापी प्रारंभ कर नोम् तोम धृपद संगीत संहीता और संहिता के शब्दसे अनेकानेक लयाकृती निर्माण कर लय का विकास होकर धृपद गायन अपना आकार सिध्द करता है । इसलिये धीमी गती के भारदस्त, गंभीर और तेजस्वी अविष्कार का वैशिष्टय ही धृपद गायन कहलाता है ।

धृपद शैलीका एक महत्वपूर्ण अंग ये है की लय के अनेक प्रकार इसमें किये जाते है । दुगून, तिगून, चौगून, आड, कुआड आदि । प्राचीन काल से धृपद की परंपरा में नोम् तोम् आलापी का उपयोग नही होता था । पाँचसौ वर्षो से धृपद गायन की विधी प्रचलीत है परंतु पिछले देडसौं वर्षोसे इस गायन का प्रचार कम हुआ दिखाई देता है । इसके अनेक कारणोंमें एक महत्त्वपुर्ण कारण यही है की यह एक गणितीय और ताल के साथ

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

लय के प्रकार से आविष्कार करने से इस गायनविधी में रंजकता का अभाव दिखाई देता है । भावना विभोरता, प्रतिभा, रसमयता का अभाव होने के कारन कलाकार इस गायकी की और प्रभावीत कम दिखाई देता है । अपितू धृपद गायन विद्यासेंही ख्याल गायन की परंपरा विकसित होकर आज संपूर्ण भारतवर्ष में अधिराज्य करती आ रही है । धृपद गायन विधी सें ही आज की घराना परंपरा निर्माण हुई है । इसलिये इस गायन विधी का एक महत्वपूर्ण स्थान आज भी भारतीय संगीत में विद्यमान है ।

'मआदनुलमूसीकी' नामक ग्रंथ में हकीम मुहम्मद करम इमाम ने लिखा है की, सोलहवी शताब्दी में अकबर बादशहा के दरबार में चार महागुणी कलावंत रहते थे । इन चारों कलावंतो के निवासी स्थान नाम सें चार बानीयाँ प्रसिध्द हुई । बानी का अर्थ यहाँ वाणी है । वाणी का अर्थ बोली या उक्ती होता है । अकबर बादशहा के ये चार कलावंत अलग-अलग धृपद गायन करते थे । इन चार बानीयों के नाम और कलाकारोंके नाम इस प्रकार है ।

१. **गोबरहार वाणी :**मियाँ तानसेन इस वाणी के प्रवर्तक है ।

२. **डागुर वाणी :**ब्रजचंद ब्राम्हण इस वाणी के प्रवर्तक है । वह डागुर निवासी थे ।

३. **खंण्डार वाणी:**राजा समोखनसिंह इस वाणी के प्रवर्तक है । वह खंण्डार नामक स्थान के निवासी थे ।

४. **नौहार वाणी :**श्रीचंद राजपुत इस वाणी के प्रवर्तक है । वह नौहार निवासी थे ।

उपर्लिखित चार वाणीयाँ चार अलग प्रकारकी धृपद गायनविधी अकबर बादशहा के सामने प्रस्तुत करते थे ।

१. गोबरहार वाणी :

मियाँ तानसेन की इस वाणी को गौरारी वाणी या शुध्द वाणी भी कहा जाता है । इसका प्रधान गुण प्रसादीक है, आध्यात्मिक है, और शांत रस का परीपोष यह गायनविधी करती है । इसकी गती धीर, गंभार प्रकारकी होती है । इस वाणी को राजा की उपाधि दि जाती है ।

२. डागुर वाणी :

ब्रजचंद ब्राम्हण के इस वाणी में स्वरों का उपयोग वक्रतापूर्वक किया जाता है । डांगर प्रदेश की भाषा का आधार इस वाणी में लिया जाता है । इसका प्रधान गूण सरलता और लालीत्य है । इस वाणी की गति सहज व सरल है । इस वाणी को मंत्री की उपाधी दि जाती है ।

३. खंण्डार वाणी :

राजा समोखन सिंह के निवास स्थान से इस वाणी को नाम दिया है । तानसेन की कन्या से राजा समोखन सिंह का विवाह हुआ था । यह वाणी वादक के रूपमें अकबर बादशहा के दरबार में प्रसिध्द् थे । इस वाणी की लय अति विलंबित नही होती । यह तीव्र रसपरी पोषक वाणी है । इस वाणी को सेनापती की उपाधि दि गई है ।

४. नौहार वाणी :

श्रीचंद राजपुत के इस वाणी मे एक से दो- तीन स्वरों का लंघन करके परावर्ती स्वर में पहुचना यह विधी बारबार की जाती है । अदभुत रस का परीपोष इस वाणी से होता है । नौहार वाणी को सेवक की पदवी दि जाती है ।

उपरोक्त सभी वाणीयाँ प्रसिध्द् है । और अनेक पंडीत, संगीततज्ञ और कलाकरोंव्दारा यह परंपरा आज भी अपना अनोखापन संभाले हुए है । आज अनेक कलाकार धृपद गायन का प्रस्तुतीकरण करते है । और इस प्राचीन महत्वापूर्ण परंपरा को नयी पिढी के सामने उसी रूपमें प्रस्तुत कर इस परंपरा को आगे ले जा रहे है । आज आधुनिक समय में डागर बंधू, गुंदेचा बंधु, उदय भवाळकर इ. अनेक कलाकार इस परंपरा को संभाले हुए

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

है और अनेक गुणी शिष्य तयार करने का महत्वापुर्ण कार्य ये महान संगीततज्ञ करते आ रहे है । इसी कारण आज भी धृपद गायन विधी जीवत रूप में पायी जा रही है । और आगे भी ये परंपरा ऐसी ही विकसित होगी ।

संदर्भ ग्रंथ :

१) संगीत विशारद - वसंत
२) जुळु पाहणारे दोन तंबोरे - बबनराव हळदणकर
३) भारतीय संगीत का इतिहास - उमेश जोशी
४) संगीत रत्नावली - वसंत
५) संगीत शास्त्र परीचय - मधुकर गोडसे

Govt. College of Arts & Science Aurangabad

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad